यात्री बने फरिश्ते

ई. वेन

दो बहादुर भारतीयों ने अमेरिका यात्रा के दौरान रात के अंधेरे में एक महिला की जिंदगी बचाई।

किसी यात्री के लिए किसी दूसरे देश में यह भयावह स्वप्न की तरह हो सकता था। अपने होटल में बैठे हुए आप रात के समय मदद के लिए किसी की चीख सुनते हैं। एक अपरिचित इलाके में क्या किसी की मदद के लिए जाना सुरक्षित है? कौन जाने दरवाजा खोलते ही क्या हो? दक्षिण-पश्चिम अमेरिकी राज्य न्यू मेक्सिको के सांता फे में घरेलू हिंसा की शिकार महिला का सौभाग्य था कि जिन लोगों ने उसकी चीखें सुनीं, वे महिलाओं को खरीद-फरोख्त से बचाने के काम में खासे अनुभवी थे।

महिलाओं को खरीद-फरोख्त से बचाने के काम में जुटे कार्यकर्ता-ऋषिकांत और जटाशंकर अमेरिकी विदेश मंत्रालय के इंटरनेशनल विजिटर लीडरशिप प्रोग्राम के तहत अमेरिका में थे। उन्होंने डर और अनिश्चितता के उस क्षण को नायकत्व में तब्दील कर दिया। 7 दिसंबर, 2005 को उन्होंने एक नौजवान महिला को बचाया जिस पर हमला किया जा रहा था। उन्हें सांता फे सिटी काउंसिल की तरफ से प्रशंसा प्रमाणपत्र दिए गए।

इस गाथा की शुरुआत न्यू मेक्सिको की उस अहम रात से बहुत पहले शुरु हुई थी। ऋषिकांत की जिंदगी में इसकी शुरुआत नब्बे के दशक के शुरु में हुई थी। उस समय वह वह बतौर कॉलेज छात्र नई दिल्ली के एक वेश्यालय में एड्स शिक्षा को बढ़ावा देने पर काम कर रहे थे। वेश्यालय के अंदर बंद और जिस्मफरोशी के लिए बेची गई एक लड़की ने उससे बचाने की गुहार की। जब वह उसकी मदद की तैयारी कर रहा था, तो वेश्यालय के मालिक को इस बचाव योजना का पता लग गया और उसने उस लड़की को कहीं और भेज दिया। ऋषिकांत ने उस लड़की को दोबारा कभी नहीं देखा। वह बताते हैं, ''मैं उसे अपनी आंखों में देखता हूं। हाथ जोड़कर की गई उस प्रार्थना ने मुझे बदल दिया। अब मैं जानता हूं कि मरने तक मैं जिस्मफरोशी के लिए महिलाओं की सौदेबाजी के खिलाफ काम करूंगा।'' इसके बाद उन्होंने *शक्ति वाहिनी* को शुरु करने में मदद की, जो 1994 से अब तक हजारों महिलाओं और बच्चों को बचा चुकी है।

शंकर एक अन्य गैर-सरकारी संगठन, *एमएसएस सेवा* के लिए काम करते हैं। यह नेपाल की सीमा के पास गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) में स्थित है। राज्य का यह इलाका नेपाल से भारत वेश्यावृत्ति के लाई जाने वाली लड़कियों और खास तौर पर बच्चों के कारोबार का केंद्र है। अपने काम के प्रति शंकर का समर्पण स्पष्ट है-मैं इसे रोकने के लिए नहीं हूं, मैं इसके समूल नाश के लिए हूं। मैं सीमा पर होने वाले इस वेश्यावृत्ति के कारोबार का समूल नाश करना चाहता हूं।

दोनों ऋषिकांत और शंकर को विदेश विभाग के इंटरनेशनल विजिटर्स लीडरशिप प्रोग्राम के लिए नामांकित किया गया था। इसके तहत उन्हें अमेरिका में तीन हफ्ते गुजारने थे और अमेरिका के कानून लागू करने वाले और महिलाओं की खरीद-फरोख्त रोकने और अमेरिका के कार्यकर्ता समूहों के बारे में समझना था। विदेश विभाग के मुताबिक 200 से ज्यादा वर्तमान और भूतपूर्व राज्याध्यक्ष इस कार्यक्रम के पूर्व सहभागी रहे हैं।

वाशिंगटन, डी.सी. में सरकारी अधिकारियों, लिटिल राक (अराकांसस) में जमीनी कार्यकर्ताओं और सिएटल के एचआईवी-एड्स संगठनों के जमीनी कार्यकर्ताओं से मिलने के बाद वे दोनों सांता फे के अपनी आखिरी पड़ाव पर थे। ऋषिकांत और शंकर एक होटल के एक कमरे में साथ-साथ थे और दोनों में से कोई भी नहीं सो पा रहा था। इसलिए उन्होंने रात में करीब दो बजे किशोर कुमार

फोटो: सौजन्य जटा शंकर

जटा शंकर (बाएं) और ऋषिकांत: इन्होंने न्यू मेक्सिको के सांता फे में घरेलू हिंसा की शिकार एक महिला को बचाया। ये दोनों इंटरनेशनल विजिटर्स लीडरशिप प्रोग्राम के तहत अमेरिका गए थे।

नीचे: सांता फे के पुलिस विभाग के उप-प्रमुख राय बायफ्रेड, कांत और शंकर

की फिल्म *चलते-चलते* का संगीत लैपटॉप पर सुनना शुरु किया। तब ही उन्होंने पार्किंग क्षेत्र से चीख सुनी- मुझे मत मारो, कृपया मेरी मदद कीजिए।

दोनों उछलकर खिड़की के पास पहुंचे। बाहर बर्फबारी के धुंधलके में उन्होंने देखा कि पार्किंग क्षेत्र में एक महिला नग्न अवस्था में गिरी हुई थी और एक व्यक्ति उसकी जंघाओं और पेट पर हमला कर रहा था। ऋषिकांत उस व्यक्ति पर चिल्लाए और बाहर भागे। उन्होंने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया, जबकि शंकर बर्फ में पड़ी उस महिला की मदद के लिए पहुंचे। वह बताते हैं, ''सब तरफ खून था, वह चीख रही थी और वह मुझसे लिपट गई।''

वे उसे होटल की रिसेप्शन डेस्क पर लेकर आए और उसे कुर्सी पर बिठाया। शंकर ने उसे दिलासा देने की कोशिश की और रात्रिकालीन क्लर्क ने पुलिस को मदद के लिए फोन किया। पर शंकर यहां लंबे समय तक नहीं रुके-मारने वाला व्यक्ति ऋषिकांत की पकड़ से छूटकर फिर भाग गया था। दोनों व्यक्ति उस व्यक्ति के पीछे भागे और उसके पैरों पर तब तक लातें मारीं जब तक कि वह लड़खड़ा नहीं गया। शंकर ने उसे पकड़ लिया लेकिन इस बार उसने एक चाकू निकाल लिया। उन्होंने उसकी पैंट के कमर के हिस्से में पिस्तौल भी लगी देखी। वह चिल्ला रहा था-मुझे हाथ मत लगाना, मैं तुम्हे मार डालूंगा। पिस्तौल की धमकी इन दोनों को रोक नहीं पाई। शंकर कहते हैं, '' मैं महिलाओं की खरीद-फरोख्त से जुड़े लोगों से टकरा चुका हूं। मैं डरता नहीं। अगर आप में दम हैं तो आप कर गुजरते हैं।'' लेकिन हालात और खराब होने वाले थे।

जब शंकर उस व्यक्ति को पकड़े रखने की कोशिश कर रहे थे तो ऋषिकांत ने पास से गुजरती एक कार को मदद के लिए रोका। उन्होंने गलत कार को चुना। मदद देना तो दूर, उस व्यक्ति ने चीखना शुरु कर दिया और गोली मारने की धमकी देने लगा।

ऋषिकांत बताते हैं, ''एक बार जब उसने कार की खिड़की खोली, तो मैंने सीट पर एक पिस्तौल रखी देखी। मैंने जटाशंकर को पलटकर बताया और कहा- ''भागो। लेकिन जटाशंकर भाग नहीं रहे थे, वह अब भी उस दूसरे आदमी को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। मैं उनकी मदद के लिए गया और हम कार से दूर जा पाए। सौभाग्य से रिसेप्शनिस्ट की वजह से पुलिस तुरंत आ गई।'' ऋषिकांत एक क्षण के लिए रुकते हैं और स्वीकार करते हैं, ''यह सौभाग्य ही है कि हम आज जिंदा हैं...मैं पुलिस की प्रतिक्रिया की गति और शिकार महिला के प्रति उनकी संवेदनशीलता से बहुत प्रभावित हूं।''

सांता फे के पुलिस विभाग के उप-प्रमुख राय बायफोर्ड ने स्पैन को बताया, ''इस पूरी उठापटक वाली गाथा के आखिर में दुर्भाग्य से वह पुरुष भाग गया लेकिन हम उस महिला को और अधिक चोट से बचा पाए। मैं जानता हूं कि जब उन्होंने संदिग्ध व्यक्ति का पीछा शुरु किया था तो इन दोनों भारतीयों में से एक नंगे पैर था।'' पुलिस विभाग ने दोनों को प्रशंसा प्रमाणपत्र दिए हैं। हमलावर शिकार महिला का पुरुष मित्र निकला और घरेलू हिंसा के मामले की तफ्तीश शुरु हुई।

साभार: जटा शंकर

ऋषिकांत और शंकर जैसे बहादुर पुरुष भारत में महिलाओं की खरीद-फरोख्त के खिलाफ चलने वाली जंग की अग्रिम कतारों में हैं। ऐसी जंग जो हर साल और मजबूत हो रही है। कन्याओं की भ्रूण हत्याओं के चलते पूरे देश का सेक्स अनुपात गड़बड़ा गया है। इसके परिणामस्वरुप और ज्यादा लड़कियां वेश्यावृत्ति और जबरन शादियों में धकेली जा रही हैं। हां, पटाखों, हीरों, कालीनों और साड़ियों जैसे उत्पादों में काम करने के लिए बाल श्रमिकों की मांग बदस्तूर बनी हुई है। निश्चित आंकड़े नहीं हैं, लेकिन अनुमान है कि लाखों महिलाएं और बच्चे जबरिया श्रमिक के रूप में काम करते हैं।

ऋषिकांत उस रात को याद करते हुए कहते हैं, ''हम भाग्यशाली हैं कि आज भी जीवित हैं...मैं पुलिस की तत्परता देखकर और पीड़ित महिला के प्रति उनके संवेदनशील रवैए से बेहद प्रभावित हुआ।''

इस संबंध में अपराध साबित होने की दर बहुत कम है। अमेरिकी सरकार की एक निगरानी रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2004 में मुंबई में सिर्फ 53 लोगों को वेश्यावृत्ति से जुड़े अपराधों का अभियुक्त बनाया गया और 11 पर अपराध साबित हुआ। यह रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2003 के मुकाबले अपराध साबित होने के मामलों में बढ़ोतरी हुई है लेकिन भारत में वेश्यावृत्ति के सबसे बड़े केंद्र के रुप में मुंबई की भूमिका को देखते हुए यह अपर्याप्त है।

तफ्तीश और मुकदमा चलाने के तौरतरीकों में सुधार और कानून पर अमल के लिए प्रशिक्षण में मदद देने के लिए अमेरिकी सरकार ने हाल में बीस लाख डॉलर का योगदान किया है। यह योगदान संयुक्त राष्ट्र नशीले पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (यूएनओडीसी) और भारत सरकार के संयुक्त सहयोग से चलाई जा रही परियोजना के लिए है। यह अमेरिकी सरकार द्वारा वित्त-पोषित महिलाओं की खरीद-फरोख्त को रोकने से जुड़ी यूएनओडीसी की विश्व में सबसे बड़ी परियोजना होने जा रही है। यह ताजा वित्तीय मदद उस अस्सी लाख डालर की रकम का हिस्सा है, जो अमेरिका ने भारत में महिलाओं की खरीद-फरोख्त रोकने के लिए देना तय किया है। □

***लेखक:** ई. वेन स्वतंत्र पत्रकार हैं और दिल्ली में रहती हैं।*